Impact Factor: 2.0202 [GIF]

ISSN2454-27

अंक 40

बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रि

जनकृति

अगस्त 201

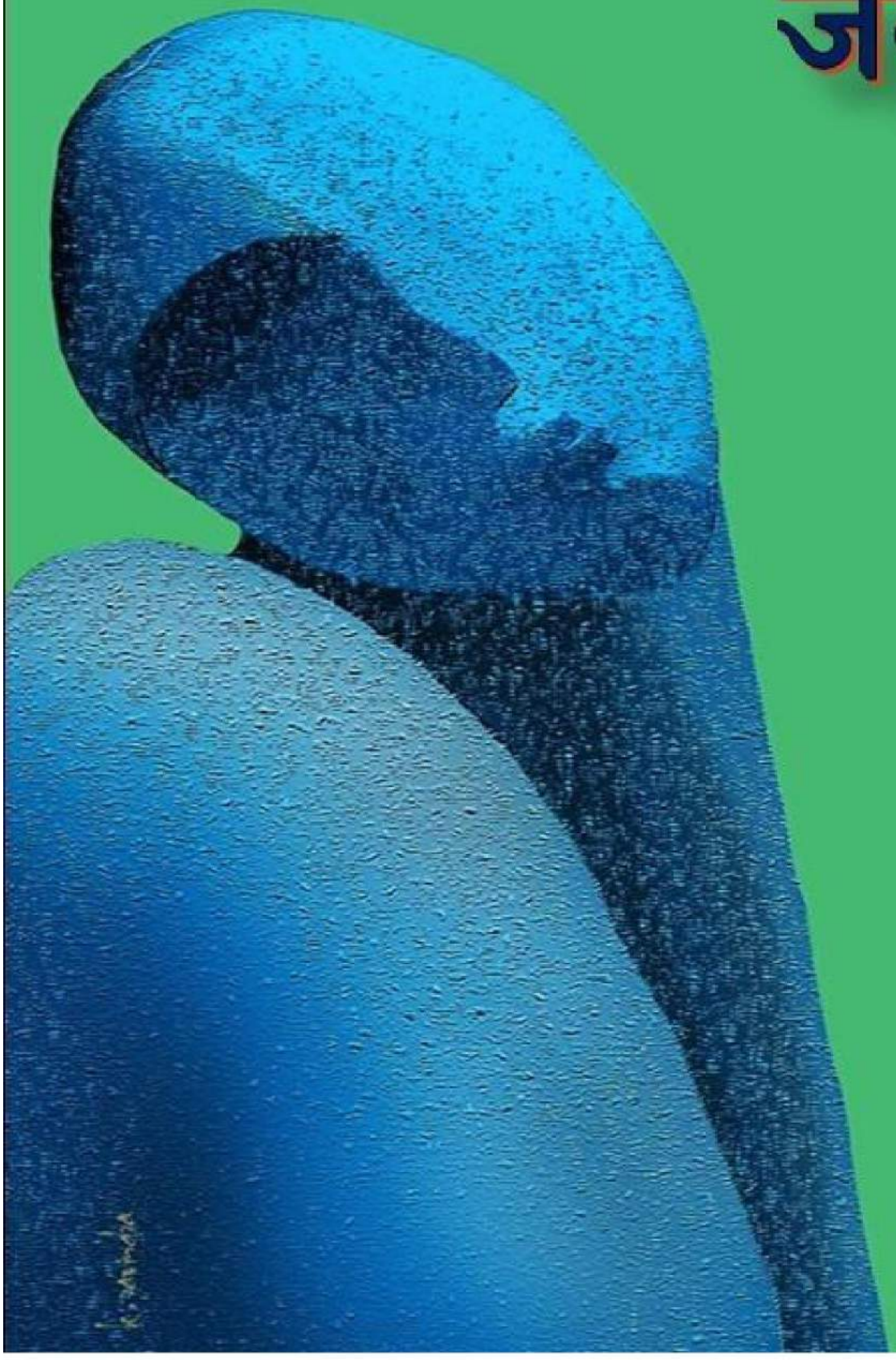

प्रधान संपादक
कुमार गौरव मिश

रोशनदान **[64-68]**

- जिम कार्बेट - एक अदभुत व्यक्तित्व: डॉ. राहिला रईस

मीडिया- विमर्श/ Media Discourse

- The impact of Facebook on Women Empowerment in Education Institution: Mahesh Kumar Meena [Research Article] [69-78]

कला- विमर्श/ Art Discourse

- असम के महान संत श्रीमंत शंकरदेव और सत्र परंपरा: वीरेन्द्र परमार [आलेख] [79-81]
- आदिलाबाद जिले के गोंडी लोक गीत: नंद कुमार [82-86]
- हिंदी साहित्य और भारतीय सिनेमा: डॉ. संतोष राजपाल नागुर

दलित एवं आदिवासी- विमर्श/ Dalit and Tribal Discourse

- हिंदी दलित कविता के प्रेरणास्रोत डॉ. बाबा साहब अंबेडकर: [91-95]
- वनोपज से खड़िया जनजाति की जीविका योजना, समस्या एवं वांछित समाधान [झारखण्ड राज्य के सिमडेगा जिला के संदर्भ में]
- आदिवासी प्रतिरोध का काव्यात्मक स्वर (झारखंड के आदिवासी साहित्य के विशेष क्रम में): डॉ. विमलेश शर्मा [शोध आलेख] [100-104]
- वर्तमान समाज में दलित स्त्री का दोहरा शोषण: अमित कुमार झा, पूनम लखानी [शोध आलेख] [105-108]

स्त्री- विमर्श/ Feminist Discourse

- महिलाओं का यौन शोषण: [शोध आलेख] -113]
- भारतीय परिप्रेक्ष्य में नारीवादी आंदोलन: शिवानी कन्नौजीय [शोध आलेख] [114-121]
- स्त्री की दुनिया बरास्ते 'मुझे चाँद चाहिए': दीप्ती मिश्रा

बाल- विमर्श/ Child Discourse

- अमृतलाल नागर का बाल साहित्य : एक विहंगावलोकन: डा. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह [शोध आलेख] [134-144]
- किशोरावस्था में 'मानसिक तनाव': जयति जैन "नूतन"

अमृतलाल नागर का बाल साहित्य : एक विहंगावलोकन

डा. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह
सहायक आचार्य
हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, केरल
ईमेल-dpsingh777@gmail.com
मोबाइल-09453476741

''नागरजी बच्चों को बहुत प्यार करते थे। हम लोग जब बच्चे थे, तब प्रायः उनसे लिपटकर जिद् करते थे- बाबूजी कहानी! बाबूजी कहानी! ! इतना ही काफी था, सुनाइये- आगे कहने की आवश्यकता नहीं होती थी।'' (शरद नागर, सम्पूर्ण बाल रचनाएँ, भूमिका)

अमृतलाल नागर संवेदनशील रचनाकार थे और उनका मन गंभीर साहित्य सर्जना के साथ बाल साहित्य की रचना में खूब रमा है। वे यह बात भली-भाँति जानते थे कि अच्छे साहित्य की आवश्यकता बड़ों के साथ-साथ बच्चों को भी है- ''यदि सरल बनाकर समझाया जाय तो बच्चे कठिन से कठिन विषय को हृदयंगम कर सकते हैं- बच्चों को डाटने फटकारने के बजाय अगर उनके साथ खेला जाय और बातचीत की जाय तो उनके गुण उभरकर विकास पा सकते हैं।'' (रवीन्द्र रचना संचयन) बच्चों के मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए उन्होंने न केवल रोचक, मनोरंजक, ज्ञानप्रद और प्रेरणादायक पुस्तकों की रचना की बल्कि कल्पना प्रधान फंतासियों से भरपूर पौराणिक एवं जासूसी कथाओं की सृष्टि कर उनके लिए निद्र्वन्द्व और उन्मुक्त वातावरण निर्माण का प्रयत्न किया। मनुष्य के साथ ही पशु-पक्षियों को अपनी बाल रचनाओं में स्थान देकर उन्होंने बच्चों का भरपूर मनोरंजन किया। इसके साथ ही नागर जी ने 'गृहसमाज' नामक संस्था का गठन कर बच्चों के मानसिक और चारित्रिक उन्नयन के लिए वृहत्तर प्रयास किया। अमृतलाल नागर के तीन बच्चे कुमुद, शरद और अचला थे। बाल साहित्य के क्षेत्र में नागर जी की नटखट चाची, निंदिया आ जा, बजरंगी नौरंगी, बजरंगी पहलवान, इतिहास झरोखे, बाल महाभारत, बजरंगी स्मगलरों के फंदे में, छह युग पुरुष, सभ्यता के निर्माण, अक्ल बड़ी या भैंस, सतखंडी हवेली का मालिक, इकलौता लाल, शांति निकेतन के संत का बचपन, त्रिलोक विजय आदि कृतियाँ प्रकाशित हैं।

आज की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा के रूप में कहानी को मान्यता प्राप्त है। ''कहानी रचना ऐसी मानवीय आवश्यकता है, जो लेखक को पाठक से अलग नहीं रखती... वह मानवीय-प्रक्रिया... लेखक से पाठक के दिलों को जोड़ती है।'' (सम्पूर्ण बाल रचनाएँ, भूमिका) रामायण, महाभारत ढेर सारी छोटी कहानियों का समुच्चय है। बच्चे कहानी पढ़ने और सुनने में सर्वाधिक रुचि रखते हैं। बंगाल और मराठी साहित्य में तो बाल साहित्य रचनाकारों की कसौटी माना जाता है। प्रारम्भिक बाल कहानियों में कल्पना की प्रधानता रही। परी, अप्सरा, भूत-प्रेत, साधु-महात्मा, असंभव का संभव कहानियों के मुख्य विषय रहा करते थे। बाल कहानियों में उपदेशात्मक और वर्णनात्मक शैली की प्रधानता रहा करती थी। वर्णनात्मक शैली एकरसता प्रदान करती है तो उपदेशात्मकता बच्चों में ऊब और खीझ पैदा करती है। बाल-मन इन दोनों के लिए तैयार नहीं होता। इसके लिए कहानी की शैली ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों से बातें कर सके और बात करते-करते अपनी बात कह जाये। नागर जी इसमें माहिर थे।

उनकी बाल कहानियों का वर्ण्य-विषय देखा जाय तो 'नटखट चाची' का कथानायक रमेश है जो